गुरु सदा मौजूद है

गुरु इस जगत का अंत और दूसरे जगत का प्रारम्भ है। वह द्वार है।

पवन गुरु है, पानी पिता है और महान धरती माता है। रात और दिन दाई और सेवक। उनके साथ सारा जगत खेल रहा है। शुभ-अशुभ कर्म उसके दरबार में धर्म के द्वारा बांचे जाते हैं। सब के अपने-अपने कर्म हैं, जिससे कोई उसके निकट है और कोई दूर है। नानक कहते हैं, जिन्होंने उसके नाम का ध्यान किया और सचाई से श्रम किया, उनके मुख उज्ज्वल होते हैं। और उनके साथ अनेकों मुक्त हो जाते हैं।

पवन गुरु पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवस राति दुई दाई दाइआ खेले सगलु जगतु।।
चंगिआइआ बुरिआइआ वाचै धरमु हदूरि।
करमी आपा आपणी के नेड़े के दूरि।
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छूटी नालि।

नानक के प्रतीक मूल्यवान हैं। बहुत भाव से चुने हैं।

'पवन गुरु।' कहते हैं, गुरु तो पवन की भांति है। दिखायी नहीं पड़ता, अनुभव किया जा सकता है। जो देखने जाएंगे, वे चूक जाएंगे। पवन दिखायी नहीं पड़ता, अनुभव किया जा सकता है। उसका स्पर्श ही जाना जा सकता है। तुम उसे मुट्ठी में बंद नहीं कर सकते।

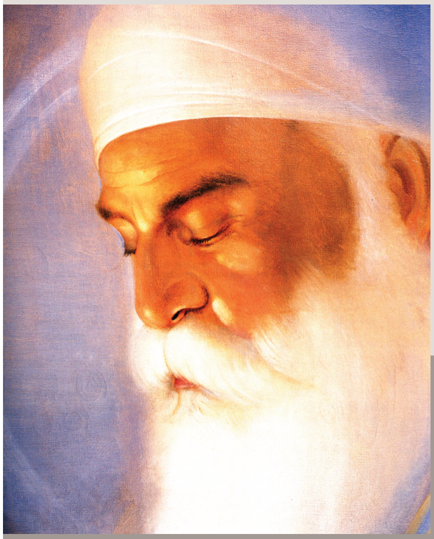

गुरु सदा मौजूद है। क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि संसार के इन अनंत लोगों में कुछ लोग उसे न पा लेते हों। कुछ लोग हमेशा ही उसे पा लेते हैं। इसलिए कभी भी धरती गुरु से खाली नहीं होती। दुर्भाग्य ऐसा कभी नहीं आता कि धरती गुरुओं से खाली हो।

गुरु को मुट्ठी में बंद नहीं किया जा सकता और जो गुरु शिष्यों की मुट्ठी में बंद हो, जान लेना गुरु नहीं। तुम सौ में निन्यानबे गुरु शिष्यों की मुट्ठी में बंद पाओगे। शिष्य उन्हें चला रहे हैं। शिष्य बताते हैं, क्या करना उचित , क्या करना उचित नहीं। शिष्य तय करते हैं कि क्या आचरण, क्या अनाचरण। शिष्यों की पंचायतें हैं, जो साधुओं को चलाती हैं। पंचायत तय करती है कि कौन साधु योग्य, कौन साााधु अयोग्य! पंचायत तय करती है, किस साधु को पूजो, किस को बाहर निकाल दो। बड़ी उलटी दुनिया है हमारी। गुरुओं का हम निर्णय करते हैं! कि तुम ऐसे उठो, तुम ऐसे बैठो, ऐसे चलो। और जो गुरु इससे राजी हो जाते हैं, वे गुरु नहीं हैं, इसीलिए राजी हो जाते हैं।

तुम अपने मठों में, आश्रमों में, गुरुओं को न पाओगे। गुरुओं के नाम से चलते हुए झूठे सिक्के पाओगे। गुरु को कोई मुट्ठी में बांध नहीं सकता। तुम महावीर को, बुद्ध को, नानक को चला नहीं सकते। वे अपनी मर्जी से चलते हैं। पवन अपनी मर्जी से बहता है। जब बहता है, बहता है; जब नहीं बहता, नहीं बहता। और तुम मुट्ठी बांधोगे, तो पवन तुम्हारे हाथ में था, वह भी बाहर हो जाएगा। जो मुक्त करने आए हैं, उन्हें बांधा नहीं जा सकता। जिनसे तुम मुक्ति खोज रहे हो, उनको तुम कैसे बांध सकते हो?

इसलिए नानक कहते हैं, 'पवन गुरु, पानी पिता, धरती माता।'

धरती के बिना तुम्हारी देह नहीं हो सकती। इसलिए माता अत्यंत जरूरी है। उसके बिना कोई जन्म नहीं है। लेकिन सब से स्थूल है पृथ्वी। इसलिए माता तो पशु-पक्षियों में भी होती है, पिता नहीं होता। पिता के लिए तो बड़ी संस्कार की, सभ्यता की अवस्था चाहिए। पिता मन है, मां देह है। जहां-जहां देह है, वहां-वहां मां है, लेकिन पिता नहीं है। जहां मन का जन्म हुआ, वहां पिता शुरू होता है। तो पिता बड़ी नयी घटना है।

सिर्फ मनुष्यों में पिता है और वह भी बहुत प्राचीन नहीं है। कोई पांच हजार साल, ज्यादा से ज्यादा। उसके पहले पिता नहीं था। क्योंकि स्त्री सामाजिक संपदा थी। अनेक लोग उसे भोगते थे। पिता का पता चलाना मुश्किल था। वह ठीक पशुओं जैसी ही स्थिति थी। तो यह जान कर तुम्हें हैरानी होगी कि काका, अंकल पुराना शब्द है पिता से। उन दिनों चाचा तो होता था, काका होता था, अंकल होता था, लेकिन पिता नहीं होता था। क्योंकि जितने ही बड़ी उम्र के लोग होते थे, पिता होने की योग्यता के लोग होते थे, वे सभी काका थे। और पता नहीं उनमें कौन पिता था। इसका कुछ पता नहीं था।

पिता बहुत बाद में आया। क्योंकि पिता मन है, संस्कार है, सभ्यता है। इसलिए पिता एक सामाजिक उपलब्धि है, प्रकृति में पिता की कोई भी पहचान नहीं है। सिर्फ समाज जब बहुत विकसित होता है तो पिता आता है।

इसलिए नानक कहते हैं, मां तो धरती जैसी है, उसके बिना कोई हो नहीं सकता। सब से स्थूल है वह।

और पिता का संबध ज्यादा तरल है। मां का संबंध ज्यादा स्थूल है। तरलता की खबर देने के लिए वे कहते हैं, पानी।

'और पवन गुरु।'

ये तीन सीढ़ियां हैं, मां—धरती, बहुत स्थूल, मैटीरीयल, पदार्थ। इसलिए स्त्री को हमने प्रकृति कहा है। उसके बाद की ऊंची एक स्थिति है, जहां पिता का संबंध शुरू होता है, सभ्यता, समाज, संस्कृति। और उससे भी ऊंची एक स्थिति है, जहां गुरु का संबंध शुरू होता है, धर्म, योग, यंत्र।

अगर तुम मां पर ही रुक गए, तो करीब-करीब पशु जैसे रह जाओगे। अगर पिता पर रुक गए, तो मात्र मनुष्य रह जाओगे। जब तक तुम गुरु तक न पहुंचो तब तक तुम्हारे आत्मवान होने की कोई स्थिति बनती नहीं। तुम्हारे जीवन की तीन सीढ़ियां हैं। मां तक तो सभी पशु पहुंच जाते हैं। पिता तक सभी मनुष्य पहुंच जाते हैं। गुरु तक बहुत थोड़े से लोग पहुंच पाते हैं। और जब तक तुम गुरु तक न पहुंचो, तब तक तुम्हारी पूरी ऊंचाई न आएगी। क्योंकि मां शरीर का संबंध, पिता मन का संबंध है, गुरु आत्मा का संबंध है। वह इस जगत में सब से बड़ा संबंध है। उससे न तो गहरा कोई संबंध है, न ऊंचा कोई संबंध है।

इसलिए जो लोग बिना गुरु के हैं, करीब-करीब अधूरे हैं। गुरु के साथ ही तुम पूरे होते हो। इस जगत की यात्रा पूरी होती है और दूसरे जगत की यात्रा पूरी होती है। गुरु इस जगत का अंत और दूसरे जगत का प्रारंभ है। वह द्वार है। इसलिए तो नानक ने अपने मंदिर को गुरुदारा कहा। द्वार का मतलब होता है एक दुनिया समाप्त, दूसरी दुनिया शुरू। इस तरह एक दुनिया, उस तरफ दुनिया। गुरु बीच में है।

'रात और दिन दाई और सेवक हैं, उनके साथ सारा जगत खेल रहा है।' समय के साथ सारा जगत खेल रहा है। खेलने वाले दो तरह के

ये तीन सीढ़ियां हैं, मां-धरती, बहुत स्थूल, मैटीरीयल, पदार्थ। इसलिए स्त्री को हमने प्रकृति कहा है। उसके बाद की ऊंची एक स्थिति है, जहां पिता का संबंध शुरू होता है, सभ्यता, समाज, संस्कृति और उससे भी ऊंची एक स्थिति है, जहां गुरु का संबंध शुरू होता है, धर्म, योग, यंत्र

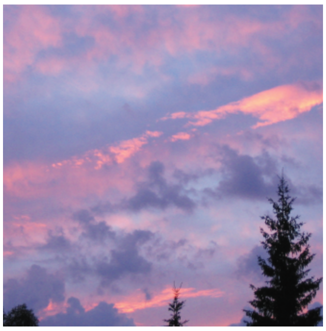

नानक कहते हैं, न कोई ऊंच है, न कोई नीच। न कोई पात्र, न कोई अपात्र। अगर तुम अपात्र हो तो अपने ही कारण। अपने में थोड़ा फर्क करो, और तुम पात्र हो जाओगे। क्योंकि जो पात्र हैं, उनमें और तुम में सिर्फ एक ही फर्क है। वे परमात्मा की तरफ उन्मुख हैं, तुम परमात्मा की तरफ विमुख हो

हैं। एक, जिन्होंने नौकर को और सेवक को मालिक बना लिया है। और एक, जिन्होंने नौकर को और सेवक को नौकर ही समझा है।

समय तुम्हारा मालिक नहीं है, तुम्हारा गुलाम है। तुम उसका उपयोग करो। लेकिन समय को तुम अपना उपयोग मत करने दो। हालत बिलकुल उलटी है। समय तुम्हारा उपयोग कर रहा है।

लोग मेरे पास आते हैं। वे कहते हैं, ध्यान करना है, लेकिन समय नहीं है। ध्यान करने के लिए समय नहीं है? समय तुम्हारा मालिक है? या तुम समय के मालिक हो? अगर तुम समय के मालिक हो, तो बहुत समय है ध्यान करने के लिए। अगर तुम गुलाम हो, तो कोई समय नहीं है। क्योंकि सिनेमा देखने के लिए तुम्हारे पास समय है, सरकस जाने के लिए समय है। सब चीजों के लिए समय है।

बहुत मजे की बात है। यही आदमी सुबह बैठा अखबार पढ़ रहा हो घर में; इससे पूछो, क्या कर रहे हो? यह कहता है, समय काट रहे हैं। यही आदमी समय काटता है। ज्यादा समय है, काटता है। समय काटे नहीं कटता, लोग कहते हैं। और जब ध्यान की बात आती है, तो वे कहते हैं, समय कहां? वही के वही लोग! ऐसे समय बहुत है, काटे नहीं कटता। टेलीविजन देखो, क्लब जाओ, फिर भी बचा रहता है। कहां बिताओ, यह सवाल उठता है।

छुट्टी के दिन लोग बड़ी कठिनाई में होते हैं, क्या करो? छुट्टी के दिन बिलकुल थक जाते हैं, कुछ न कर-कर के। सोमवार को वे बड़े प्रसन्न होते हैं। जब सुबह वे दफ्तर की तरफ जा रहे हैं, तब बड़े प्रसन्न हैं, कि किसी तरह रविवार टल गया। या रविवार को कुछ उपद्रव कर लेते हैं। दस-पचास, सौ मील का चक्कर लगा आएंगे। समुद्र तट पर जा रहे हैं, पहाड़ी पर जा रहे हैं। वह जो एक दिन विश्राम का मिला था उसको भी काम में...। अमरीका में कहावत है छुट्टी के दिन लोग इतने थक जाते हैं, जितने कि कभी भी काम के दिन नहीं थकते।

समय तुम्हारा उपयोग कर रहा है। अगर तुम मालिक हो, तो समय बहुत है। अगर तुम गुलाम हो, तो बिलकुल नहीं। गुलाम के पास क्या हो सकता है? समय भी नहीं है।

नानक कहते हैं, 'उनके साथ सारा जगत खेल खेल रहा है।'

खेल दो तरह का चल रहा है। एक, जो मालिक हैं, वे समय का उपयोग कर लेते हैं। वे इस समय में ही उसको जानने के लिए रास्ते बना लेते हैं, जो समय के बाहर है। वहीं ध्यान है। अन्यथा दूसरे लोग हैं, जो समय के द्वारा उपयोग कर लिए जाते हैं।

मैंने सुना है, एक भिखमंगा अनाज की दुकान पर गया। और उसने कहा कि मेरे पास बिलकुल पैसे नहीं हैं। और आज तो तुम्हें अनाज उधार ही देना पड़ेगा। दुकानदार को दया आ गयी। उसने कहा, ठीक है, अनाज तो मैं दिए देता हूं। लेकिन एक बात ख्याल रखना। मुझे थोड़ा शक होता है। गांव में सरकस आया हुआ है। तुम इस को बेच कर सरकस मत देख लेना। उस आदमी ने कहा, तुम इसकी बिलकुल फिक्र मत करो। सरकस देखने के लिए पैसे मैंने पहले से ही बचा लिए हैं।,

व्यर्थ के लिए तो तुम पहले ही समय बचाए हुए हो। सार्थक के लिए समय नहीं बचता। समय के मालिक बनो, तो ही समय के पास जा सकोगे।

'शुभ और अशुभ कर्म उसके दरबार में धर्म के द्वारा बांचे जाते हैं। सबके अपने-अपने कर्म हैं, जिससे कोई उसके निकट है और दूर है।'

परमात्मा सब के पास है। उसकी तरफ से न तो तुम दूर हो और न तुम पास हो। वह सब के पास एक जैसा है। लेकिन तुम्हारी तरफ से तुम दूर हो या पास हो। तुम्हारे कर्म के कारण या तो तुम निकट हो या दूर हो।

करमी आपा आपणी के नेड़े के दूरि।

तुमने अगर ऐसे कर्म किए हैं, जो तुम्हें सुलाते हैं, मूर्च्छित करते हैं, तो तुम पीठ किए खड़े हो। सूरज वहीं है, तुम पीठ किए खड़े हो। तुमने अगर ऐसे कर्म किए, जो तुम्हें जगाते हैं, होश से भरते हैं, तो तुमने सूरज की तरफ मुंह कर लिया। खड़े तुम वहीं हो। सूरज भी वहीं है, तुम भी वहीं हो। फर्क सिर्फ पड़ जाता है कि तुम्हारी पीठ सूरज की तरफ है, तो बहुत दूर; मुंह सूरज की तरफ है, तो बहुत पास।

परमात्मा तुम्हारे सदा एक सा ही पास है। उसकी नजर में, नानक कहते हैं, न कोई ऊंच है, न कोई नीच। न कोई पात्र, न कोई अपात्र। अगर तुम अपात्र हो तो अपने ही कारण। अपने में थोड़ा फर्क करो, और तुम पात्र हो जाओगे। क्योंकि जो पात्र हैं, उनमें और तुम में सिर्फ एक ही फर्क है। वे परमात्मा की तरफ उन्मुख हैं, तुम परमात्मा की तरफ विमुख हो। नानक कहते हैं, 'जिन्होंने उसके नाम का ध्यान किया और सचाई

नानक कहते हैं, जब भी कोई मुक्त होता है, अकेला ही मुक्त नहीं होता। क्योंकि मुक्ति इतनी परम घटना है, और मुक्ति एक ऐसा महान अवसर है—एक व्यक्ति की मुक्ति भी—कि जो भी उसके निकट आते हैं, वे भी उस सुगंध से भर जाते हैं। उनकी जीवन-यात्रा भी बदल जाती है

से श्रम किया, उनके मुख उज्ज्वल होते हैं। और उनके साथ अनेकों मुक्त होते हैं।' नानक कहते हैं, जब भी कोई मुक्त होता है, अकेला ही मुक्त नहीं होता। क्योंकि मुक्ति इतनी परम घटना है, और मुक्ति एक ऐसा महान अवसर है—एक व्यक्ति की मुक्ति भी—कि जो भी उसके निकट आते हैं, वे भी उस सुगंध से भर जाते हैं। उनकी जीवन-यात्रा भी बदल जाती है। जो भी उसके पास आ जाते हैं, वे भी उस ओंकार की धुन से भर जाते हैं। उनको भी मुक्ति का रस लग जाता है। उनको भी स्वाद मिल जाता है थोड़ा सा। और वह स्वाद उनके पूरे जीवन को बदल देता है।

'जिन्होंने उनका ध्यान किया, सचाई से उसके लिए श्रम किया, उनके मुख उज्ज्वल होते हैं।'

उनके भीतर एक प्रकाश जलता है। जो अगर तुम प्रेम से देखो, तो तुम्हें दिखायी पड़ सकता है। तुम अगर पूजा के भाव से पहचानो, तो तत्क्षण पहचान आ सकता है। उनके भीतर एक दीया जलता है। और उस दीए की रोशनी उनके चारों तरफ पड़ती है।

इसलिए तो हमने संतपुरुषों, अवतारों के चेहरे के आसपास आभा का मंडल बनाया है। वह आभा का मंडल सभी को दिखायी नहीं पड़ता। वह उन्हीं को दिखायी पड़ता है, जिनके भीतर भाव की पहली किरण उतर आयी है। उन्हीं को दिखायी पड़ता है जिनके पास श्रद्धा है। जिनके पास श्रद्धा की पहचान है।

और जिनको यह दिखायी पड़ता है, वे उस जले हुए दीए से अपना बुझा हुआ दीया भी जला लेते हैं। जब भी कोई एक मुक्त होता है, तो हजारों उसकी छाया में मुक्त होते हैं। एक व्यक्ति की मुक्ति कभी भी अकेली नहीं घटती। घट ही नहीं सकती। क्योंकि जब इतना परम अवसर मिलता है, तो ऐसा व्यक्ति बहुतों के लिए द्वार बन जाता है।

तुम अपनी श्रद्धा और भाव को जगाए रखना, ताकि तुम्हें गुरु पहचान सके। और गुरु को जिसने पहचान लिया, उसने इस जगत में परमात्मा के हाथ को पहचान लिया।

गुरु को जिसने पहचान लिया, उसने इस जगत में जगत के जो बाहर है उस को पहचान लिया। उसे द्वार मिल गया। और द्वार मिल जाए तो सब मिल गया। खोया तो कभी भी कुछ नहीं है। द्वार से गुजर कर तुम्हें अपनी पहचान आ जाती है। जो प्रकाश सदा से तुम्हारा है, उसकी सुरति आ जाती है। जो संपदा सदा से तुम्हारे पास है, आविष्कार हो जाता है। जो तुम सदा से ही थे, जिसे तुमने कभी खोया न था, गुरु तुम्हें उसकी पहचान करा देता है।

कबीर ने कहा है, गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पांव?

किसके छुऊं चरण? अब दोनों सामने खड़े हैं। कबीर बड़ी दुविधा में पड़ गया हैं। किसके छुऊं चरण? अगर परमात्मा के चरण पहले छुऊं, तो गुरु का असम्मान होता है। अगर गुरु के चरण पहले छुऊं, तो परमात्मा का असम्मान होता है। तो कबीर कहते हैं, किस के चरण छुऊं?

फिर वे गुरु के ही चरण छूते हैं। क्योंकि वे कहते हैं, बलिहारी गुरु आपकी जिन गोविंद दियो बताय। जब वे दुविधा में पड़े हैं, तब गुरु ने कहा कि तू गोविंद के ही चरण छू। क्योंकि मैं यहीं तक था। यह बड़ी मीठी बात है। जब कबीर दुविधा में पड़े तो गुरु ने कहा, इशारा किया, कि तू गोंविद के चरण छू, मैं यही तक था। मेरी बात यहीं समाप्त हो गयी। अब गोविंद सामने खड़े हैं। अब तू उन्हीं के चरण छू।

बलिहारी गुरु आपकी जिन गोविंद दियो बताय।

लेकिन कबीर ने चरण फिर गुरु के ही छुए। क्योंकि उसकी बलिहारी है, उन्होंने गोविंद बताया। श्रद्धा हो तुम्हारे पास, तो तुम पहचान लोगे। बस! श्रद्धा चाहिए, भाव चाहिए। विचार से न कोई कभी पहुंचा है, न कोई कभी पहुंच सकता है। तुम वह असफल चेष्टा मत करना। वह असंभव है। वह कभी नहीं हुआ। और तुम भी अपवाद नहीं हो सकते।

और गुरु सदा मौजूद है। क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि संसार के इन अनंत लोगों में कुछ लोग उसे न पा लेते हों। कुछ लोग हमेशा ही उसे पा लेते हैं। इसलिए कभी भी धरती गुरु से खाली नहीं होती। दुर्भाग्य ऐसा कभी नहीं आता कि धरती गुरुओं से खाली हो। लेकिन ऐसा दुर्भाग्य कभी-कभी आ जाता है कि पहचानने वाले बिलकुल नहीं होते।

—ओशो

एक ओंकार सतनाम

प्रवचन नं. 20 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है।)